मध्यप्रदेश संदेश
मध्यप्रदेश शासन का मासिक प्रकाशन

झाड़फूंक से नहीं, दवाइयों से मिटेगा टी.बी.

■ राजु कुमार

एक ग्रामीण अधेड़ आदिवासी कोरकू महिला श्रीमती राम बाई। अपनी बीमारियों से निजात पाने के लिए भगत-भूमका के आगे-पीछे चलती रहती है। उसे पूरा विश्वास है कि सभी बीमारियों से मुक्ति दिलाने में भगत की झाड़फूंक कारगर है। यूं तो उसकी कई बीमारियों एवं झगड़े-झंझटों में भगत-भूमका का झाड़फूंक या यूं कहें कि इलाज कारगर रहा है। ऊपरी बाधाओं को भी तो वही दूर करता है। हां, राम बाई या उनके जैसे ही दूसरे आदिवासियों को इलाज के बदले में मुर्गा-मुर्गी, थोड़े रुपए, अनाज या कभी भोज देने पड़ते हैं। आखिर गांव, परिवार और व्यक्ति की भलाई करने वाले भगत का इतना हक तो बनता ही है।

पर पिछले कुछ समय से मध्यप्रदेश के बैतूल जिले के घोड़ाडोंगरी विकासखंड के हीरापुर पंचायत की इंदिरा कॉलोनी की राम बाई बहुत परेशान हैं। उनकी खांसी रुकने का नाम ही नहीं ले रही है। खांसी ऐसे उठती है, मानो साथ में प्राण ही निकल जाए। धीरे-धीरे वह कमजोर भी पड़ने लगी है। लंबे समय से वह इसका इलाज गांव के भगत से करा रही है, पर मर्ज है कि बढ़ता ही जा रहा है। वह सोच में पड़ी रहती है कि आखिर हमारा भगत खांसी क्यों नहीं दूर कर पा रहा है। क्यों मेरी छाती में दर्द है। मैं अब काम भी नहीं कर पा रही हूं। असमंजस में पड़ी राम बाई एवं उसके परिवार के लोग गांव के ही झोला-छाप डॉक्टर से कुछ गोलियां भी लेते हैं, पर उसका भी कोई असर नहीं पड़ा।

अचानक एक दिन इस क्षेत्र में काम करने वाली स्वयंसेवी संस्था आदिवासी संरचना सेवा संस्थान की सचिव श्रीमती उमा गोस्वामी की नजर राम बाई पर पड़ती है। पास के गांव चोपना में एक बैठक के दरम्यान वहां मौजूद राम बाई लगातार खांसती जा रही थी। राम बाई की खांसी और उसकी कमजोरी देखकर उसके बारे में श्रीमती उमा गोस्वामी ने उसके परिवार से पूछताछ की और उसे पास के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ले जाने की सलाह दी। उनकी बात पर राम बाई के परिवार वालों ने ध्यान नहीं दिया। आखिरकार श्रीमती गोस्वामी अपने साथियों के साथ राम बाई को जबर्दस्ती शाहपुर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में ले गईं। वहां उनकी खखार की जांच और एक्सरे किया गया। और जिस बीमारी का अनुमान था, वही हुआ। राम बाई को टी.बी. की बीमारी थी तथा यदि कुछ दिन और देर हो जाती, तो उन्हें बचाना मुश्किल था।

राम बाई को कुछ दिनों के लिए बैतूल अस्पताल में भर्ती भी करना पड़ा। उमा गोस्वामी कहती हैं, राम बाई के साथ गांव की ही दो अन्य महिलाएं भागरती बाई और लीला बाई भी जांच के लिए गई थीं। जांच में उन्हें भी टी.बी. निकला। भागरती बाई की हालत भी गंभीर थी, पर उसने भर्ती होने से मना कर दिया। कुछ समय बाद ही उसकी मौत हो गई। लीला बाई को टी.बी. हुए ज्यादा दिन नहीं हुए थे, वह गांव लौट आई और डॉट्स की दवाइयां लेने लगी। राम बाई कुछ दिन अस्पताल में रही और उनकी स्थिति में सुधार हुआ, तो वे भी गांव में आकर डॉट्स प्रोवाइडर आशा के माध्यम से दवाइयां लेने लगी। भागरती की मौत और अपनी बीमारी से मुक्ति ने राम बाई और लीला बाई पर गहरा प्रभाव डाला। उन्हें यह विश्वास हो गया कि बीमारियों का इलाज झाड़फूंक से नहीं, दवाइयों से ही संभव है। आज राम बाई स्वस्थ हैं और घर एवं खेत के काम में पूरी तरह से व्यस्त हैं।

टी.बी. एक जानलेवा एवं संक्रामक बीमारी है, जिसकी रोकथाम बहुत ही जरूरी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की वैश्विक रिपोर्ट 2013 के अनुसार दुनिया में सबसे ज्यादा टी.बी. एवं एम.डी.आर.-टी.बी. के मरीज भारत में हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार टी.बी. से होने वाली 95 फीसदी मौतें निम्न एवं मध्य आय वाले देशों में होती हैं। यदि 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 12102 लाख है, तो

प्रति वर्ष टी.बी. से मरने वालों की संख्या 2 लाख 66 हजार 244 है। यानी अभी भी भारत में प्रति दो मिनट में एक व्यक्ति की मौत टी.बी. से हो रही है। यह सही है कि पहले प्रति तीन मिनट में दो व्यक्तियों की मौत टी.बी. से होती थी, जिसमें आंशिक सुधार दिख रहा है। पर दूसरी ओर भारत में पिछले कुछ सालों से टी.बी. के नए मरीजों की बढ़ोतरी भी देखी जा रही है, यानी प्रति लाख जनसंख्या नए मरीजों की पहचान में इजाफा। देश में एम.डी.आर.-टी.बी. के मरीजों की संख्या भी बढ़ती जा रही है, जो कि बहुत ही खतरनाक है। वर्ष 2012 की रिपोर्ट के अनुसार इस समय देश में एम.डी.आर.-टी.बी. मरीजों की संख्या 17 हजार 373 हो गई है। टी.बी. के मरीजों में महिलाओं की संख्या बहुत ही ज्यादा है। महिलाओं के नजरिए से इस गंभीर समस्या पर ध्यान देना जरूरी है। महिलाओं की कमजोर रोग प्रतिरोधी क्षमता के कारण यह उनके लिए बहुत ही गंभीर है। 15 से 49 साल की आयु वाली महिलाओं में एनेमिया का स्तर बहुत ज्यादा है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार 36 फीसदी महिलाएं कुपोषित एवं 55 फीसदी महिलाएं एनेमिक हैं। विवाहित महिलाओं में भी आधे से ज्यादा एनेमिक और एक तिहाई कुपोषित हैं।

आदिवासी अंचलों में गरीबी एवं जागरूकता के अभाव में इन बीमारियों के होने की संभावनाएं ज्यादा रहती हैं। मध्यप्रदेश के आदिवासी अंचलों में आज भी अपनी बीमारियों के इलाज के लिए आदिवासी समुदाय झाड़फूंक पर आश्रित है। गंभीर बीमारियों के इलाज में लगने वाला समय एवं आर्थिक बोझ बढ़ने के भय से अधिकांश लोग अस्पतालों की ओर रुख ही नहीं करते। टी.बी., कुष्ठ एवं कई अन्य जानलेवा बीमारियों का इलाज सरकारी अस्पतालों में मुफ्त किया जाता है, इसकी जानकारी आदिवासी समुदाय में दिए जाने की जरूरत है। इससे वे झाड़फूंक के बजाय इलाज के

लिए प्रेरित होंगे। मध्यप्रदेश शासन ने इन बीमारियों को रोकने एवं इनसे होने वाली मौतें कम करने के लिए पिछले साल आस्था अभियान भी चलाया। आस्था अभियान में टीबी, कुष्ठ, अंधत्व, मलेरिया, फाईलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू और उल्टी-दस्त जैसी मौसमी बीमारियों को शामिल किया गया है।

अब राम बाई अपने अनुभवों को साझा करती हैं, अस्पताल जाने में मुझे बहुत डर लग रहा था। मैं अस्पताल नहीं जाना चाहती थी। घरवाले भी डर रहे थे कि अस्पताल में रहने एवं इलाज का पैसा कहां से लाएंगे? पर मैं जब अस्पताल पहुंची और इलाज मुफ्त हुआ, तो मुझे अच्छा लगा। मैं बहुत जल्दी ठीक हो रही थी। दवाइयां कड़वी थीं, पर यदि नहीं खाती तो भागरती की तरह मुझे भी अपनी जान गंवानी पड़ती। मैं जान गई थी कि बीमारी से निजात पाने के लिए नियमित दवाइयां खानी ही पड़ेंगी। राम बाई ने इलाज के दरम्यान टी.बी. से संबंधित कई जानकारियों को हासिल किया। वह यह जान चुकी है कि यदि खांसी पुरानी पड़ जाए तो उसकी जांच अस्पताल में करवानी चाहिए। यदि किसी को टी.बी. है, तो वह दवाइयों से ठीक हो जाएगी। यदि इसका इलाज नहीं कराया गया, तो यह दूसरे लोगों को भी हो सकती है।

राम बाई और लीला बाई बताती हैं, हमने गांव की दो अन्य महिलाओं को भी इलाज के लिए प्रेरित किया। उनको भी टी.बी. थी, पर वे झाड़फूंक में लगी हुई थीं। राम बाई कहती हैं, कोयाखेड़ा में रहने वाली मेरी भतीजी लक्ष्मी बाई को भी लंबे समय से खांसी थी। उसे भी हमने इलाज के लिए प्रेरित किया। डॉक्टर ने उसकी हालत देखकर कह दिया कि उसका बचना मुश्किल है। पर मैं जानती थी कि दवाइयों के नियमित सेवन से असर पड़ेगा। उसके परिवार के लोग रो रहे थे। पर मैंने उन्हें अस्पताल में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया। आखिरकार वह बच गई और अब स्वस्थ है। हमने जिनका भी इलाज कराया है, उनसे कहा है कि यदि किसी की खांसी पुरानी पड़ जाए, तो उसे अस्पताल भेजने में मदद करो। निश्चय ही इन गंभीर बीमारियों से मुक्ति और मुफ्त इलाज ने इन आदिवासियों को इलाज के लिए प्रेरित किया है। राम बाई, लीला बाई और लक्ष्मी बाई जैसी महिलाएं प्रेरक की भूमिका निभा रही हैं। ■■■